

डॉ. ब्रूस वाल्टके, भजन, व्याख्यान 1

© 2024 ब्रूस वाल्टके और टेड हिल्डेब्रांट

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र संख्या एक है, परिचय, दृष्टिकोण का सर्वेक्षण।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना से शुरुआत करें। पिता, जब हम परम पवित्र भूमि पर कदम रखें तो हमें अपने पैरों से जूते उतारने की कृपा करें। हम आपके पवित्र वचन और आपके लोगों के शब्दों में कदम रखने वाले हैं जिन्होंने मूसा के समय से लेकर निर्वासन के बाद तक एक हजार वर्षों से भी अधिक समय तक आपका जश्र मनाया और आपसे प्रार्थना की। आपके लिए उनके शब्द, आपके लिए उनकी प्रशंसा, उनकी विनती हमारे लिए आपका शब्द बन गई है।

हम आपसे बात नहीं करवा सकते. हमारी व्याख्या पूर्णतः अपर्याप्त है। आपको हमसे बात करनी चाहिए.

हम आप पर निर्भर हैं. आपकी महान कृपा से, आप स्वयं को, अपने हृदय को, अपने उद्देश्यों को, अपने चरित्र को, और इतिहास में आप क्या कर रहे हैं, यह प्रकट करने में प्रसन्न हुए। आपने इसे हमें प्रेरित धर्मग्रंथों में दिया, जो पूरी तरह से भरोसेमंद है, ताकि हमें आपसे भविष्यवाणी का एक निश्चित शब्द मिल सके।

आपने हमें अपनी आत्मा देकर रहस्योद्घाटन का वह चक्र पूरा किया जो आपके शब्द को रोशन करने में मदद करता है। और हम जानते हैं कि आत्मा की प्रबुद्धता के बिना, हम भीतर से अंधकारमय हैं। हम नहीं देख सकते।

धन्यवाद कि हमारे पास पवित्र आत्मा है जिसने हमारी आंखें खोल दीं, जिसने हमें पवित्रशास्त्र के भीतर उस पुत्र को देखने में सक्षम बनाया जिससे आप बहुत प्रसन्न हैं। जब हम आपके लोगों और अंततः आपके स्वयं के शब्द पढ़ते हैं जो उनके बारे में बोलते हैं, तो हम उनमें आनंदित हो सकते हैं। हमारी पर्याप्तता, पिता, हममें से नहीं है।

आपने हमें जो दिया है, जो उपकरण दिए हैं, हम उन्हें स्वीकार करते हैं, लेकिन हमारी वास्तविक पर्याप्तता आप में है। और हम इसके लिए आपकी प्रशंसा करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन व्याख्यानों को अलग-अलग ढंग से सुन रहा होगा।

आपका शब्द अपरिवर्तनीय है और इसका एक निश्चित अर्थ है, लेकिन इसे अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग तरीके से सुना जाएगा। अमीरों को शांत किया जाएगा. गरीबों को सांत्वना मिलेगी.

नीचों को सांत्वना दी जाएगी और ऊंचे लोगों को चेतावनी दी जाएगी। यह हम सभी से अलग तरह से मिलता है। कोई भी शिक्षक उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

केवल आपके लिए करना संभव है। पिता, हम आपकी उपस्थिति में या किसी के दिल में तब तक नहीं घुसते जब तक कि हम आपकी आत्मा में न समा जाएं। यह हमारे लिए आपका शब्द हो। हम मसीह के नाम पर जवाब देते हैं। तथास्तु। ठीक है।

आपके साथ रहना और भजनों की पुस्तक साझा करना खुशी की बात है। भजनों में मेरी पहली गंभीर रुचि 1958 में शुरू हुई, जब मैं डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी में व्याख्या पढ़ा रहा था। एक्सजेजिस का अर्थ है दो ग्रीक शब्द, एक्स आउट ऑफ एगो, लीड।

तो, इसका मतलब है कि पाठ से यह पता लगाना कि प्रेरित लेखक अपने पाठ का क्या मतलब बताना चाहता है। यह उस व्याख्या के विपरीत है जहां हम पाठ में वही पढ़ते हैं जो हम चाहते हैं कि उसका अर्थ हो। हम वचन के प्रति समर्पित हैं।

हम शब्द को पाठ से बाहर आने की अनुमति देते हैं। इसलिए, मैंने व्याख्या सिखाई, जिससे छात्रों को पाठ को उचित रूप से पढ़ने में मदद मिली, लेकिन किसी पाठ को उचित रूप से पढ़ने के लिए, मुझे इसे समग्र रूप से पढ़ना होगा। योग हमेशा भागों से बड़ा होता है और भागों का अर्थ समग्र में होता है।

इसलिए, किसी भी किताब को सच में पढ़ाने के लिए, आप वास्तव में सिर्फ किताब का एक हिस्सा नहीं पढ़ा सकते। आपको पूरी किताब पढ़नी होगी और फिर आप वापस जाकर अलग-अलग हिस्से को समझ सकते हैं। ऐसा करना कठिन है, विशेष रूप से पुराने नियम में जहां आप उत्पत्ति के 50 कुछ अध्यायों पर काम कर रहे हैं।

पेंटाटेच में आप कई अध्यायों से निपट रहे हैं। तो, मैंने सोचा, अच्छा, मैं छोटे भागों में व्याख्या कैसे पढ़ा सकता हूँ? इसलिए, वे इसे समग्र रूप से देख सकते थे और फिर भागों को समझ सकते थे। मेरे पास यह आया कि व्याख्या सिखाने के लिए सबसे अच्छा पाठ भजन की पुस्तक थी क्योंकि वे भजन 117 से कहीं भी हैं, आपके पास भजन 119 तक तीन छंद हैं और आपके पास आठ गुना 22, 176 हैं, क्या यह है? मैं गणितज्ञ नहीं हूँ।

मेरी चेकबुक कभी भी संतुलित नहीं होती, लेकिन किसी भी मामले में, उनकी लंबाई अलग-अलग होती है। लेकिन मुझे लगता है कि औसत लंबाई लगभग 10 छंद होगी। इसलिए, यह व्याख्या सिखाने के लिए एक आदर्श पुस्तक थी।

बेशक, यह इतना गर्मजोशी भरा और समृद्ध है, जो हमारी गहरी भावनाओं, हमारी पीड़ा और फिर भी हमारे आनंद, अत्यधिक आनंद को बयां करता है। तो, यह संपूर्ण पैमाने पर चलता है। आपके द्वारा अनुभव की गई प्रत्येक भावना इस पुस्तक में व्यक्त की जाएगी।

तो, यह व्याख्या सिखाने के लिए एक आदर्श पुस्तक प्रतीत हुई। इस पुस्तक से मेरी अगली बड़ी मुलाकात 1968 में डलास में हुई। डलास में, वे साल में चार बार ऐसी चीज़ लाते थे जो उन्हें लगता था कि वह किसी दी गई किताब का उत्कृष्ट व्याख्याता है।

वे मेरे लिए सबसे अच्छे दो सप्ताह थे, प्रत्येक सेमेस्टर, वसंत में दो सप्ताह, और पतझड़, वसंत में दो सप्ताह। वे अद्भुत ईश्वरीय पुरुषों को लाएंगे और व्याख्या में बहुत सक्षम होंगे। व्याख्या व्याख्या का प्रतिरूप है।

प्रदर्शनी इसे सामने रखना है। और इसलिए, पाठ से बाहर लाना एक बात है। यह एक और आयाम है जब आपको इसे स्वादिष्ट तरीके से पेश करना होता है, ताकि लोग इसे खा सकें और इसका आनंद उठा सकें।

तो, व्याख्याकार उस किसान की तरह है जिसे खेत से खरपतवार निकालनी है, लेकिन व्याख्याकार को उसे पीसकर उसकी रोटी बनानी है और उसे आकर्षक बनाना है। और ताकि आप इसे खाना चाहें. तो व्याख्या और व्याख्या के बीच यही अंतर है।

और वैसे भी, 1968 में, उन्होंने मुझसे प्रदर्शनी करने के लिए कहा, जो एक बिल्कुल अलग आयाम है, लेकिन मैंने इसका पूरा आनंद लिया। और उसके परिणामस्वरूप, अब मुझे सब कुछ भजन संहिता पर पढ़ना पड़ा। और इसलिए मुझे यह पता चलने लगा कि मौलिक रूप से विद्वान अलग-अलग दिशाओं से पुस्तक पर आ रहे थे।

तो, व्याख्यान मूलतः भजनों के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण थे। और मैं अभी भी, आज भी, मूलतः इसी तरह हम भजनों में आने वाले हैं। हम भजनों के विभिन्न दृष्टिकोणों पर गौर करने जा रहे हैं।

तो फिर मैंने न्यू इंटरनेशनल वर्जन के लिए जिम्मेदार समिति में भी काम किया। और इसलिए, क्योंकि मैंने भजनों पर काम किया था, जब भजनों के अनुवाद का समय होता था तो मुझे हमेशा भजनों में डाला जाता था। तो, यह मेरी मंजिल का एक छोटा सा हिस्सा था।

वहाँ अन्य लोग भी थे जो मुझसे कहीं अधिक सक्षम थे। और मैंने एनआईवी के बारे में एक बात सीखी, आप इससे बहुत कुछ सीखते हैं। यह एक महान सेमिनार की तरह है और आप एक दूसरे से सीखते हैं। इसलिए, यह अनुवादक के लिए एक अनूठा अवसर है।

और फिर मैंने समय-समय पर विभिन्न संदर्भों में भजन पढ़ाए। और अब मैं भजनों पर टिप्पणी लिख रहा हूँ और मुझे प्रोफेसर ह्यूस्टन के साथ काम करने का बड़ा सौभाग्य मिला है। प्रोफेसर ह्यूस्टन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में इतिहास के व्याख्याता थे।

और इसलिए, हमने साथ मिलकर काम किया है। मैंने कहा, उसे सिखाया कि मैं स्तोत्रों पर एक टिप्पणी लिखना चाहता हूँ। वह कहते हैं, ठीक है, आपको ऐतिहासिक, संपूर्ण ऐतिहासिक व्याख्या की आवश्यकता है कि चर्च ने इसके बारे में क्या कहा है।

खैर, मैं चर्च का इतिहासकार नहीं हूँ। तो, मैंने उससे कहा, ठीक है, मैं चर्च का इतिहास लिखने में सक्षम नहीं हूँ। और इसलिए, मैंने कहा, क्या आप मेरे साथ सहयोग करेंगे और चर्च का इतिहास लिखेंगे और हमें बताएंगे कि व्याख्या का इतिहास क्या है?

तो, ईसाई पूजा के रूप में भजनों पर हमारी पुस्तक एक संयोजन है। वह प्रबुद्धता तक चर्च की आवाज देता है, और मैं भजनहार की आवाज देता हूँ। तो हमारे पास पाठ की आवाज़ है और फिर हमारे पास इतिहास की आवाज़ है कि चर्च ने भजनों को कैसे समझा है।

इसलिए, उनके साथ मिलकर काम करना एक अद्भुत सौहार्द रहा है। मैंने बहुत कुछ सीखा है और मेरे लिए, मध्य युग और वहां मौजूद सभी चीजें बिल्कुल भी मेरा किला नहीं थीं। अभी भी नहीं, लेकिन मेरे अच्छे दोस्त प्रोफेसर ह्यूस्टन की बदौलत मुझे बेहतर जागरूकता मिली है।

फिर हमने एक और पुस्तक प्रकाशित की, द स्तोत्र ऐज़ क्रिस्चियन लामेंट। और अब हम तीसरी किताब, द स्तोत्र ऐज़ क्रिस्चियन विजडम एंड प्रेज, पर एक साथ काम कर रहे हैं। तो फिलहाल हम यहीं काम कर रहे हैं।

अभी, मैं बाइबिल प्रशिक्षण के लिए बड़े सम्मान के साथ काम कर रहा हूँ। मुझे पढ़ाने और मंत्रालय का विस्तार करने का यह विशेषाधिकार देने के लिए मैं बिल का बहुत आभारी हूँ। मेरे अच्छे दोस्त, बिल माउंट के साथ सहयोग करना बेहद खुशी की बात है।

इसलिए, मुझे इस प्रक्रिया का हिस्सा बनकर बहुत खुशी हो रही है। जैसा कि मैंने कहा, आपके पास अपने नोट्स होने चाहिए और मुझे लगता है कि हम पहले पन्ने पर हैं। नहीं, यह वास्तव में पृष्ठ दो है।

हमारे पास वहां पाठ्यक्रम है। मैं पाठ्यक्रम विवरण के बारे में थोड़ा सा आरंभ करता हूँ। मूल रूप से, मैं यह कहकर शुरुआत कर रहा हूँ कि पुराने नियम की सभी पुस्तकों में, भजन ईसाई समुदाय के बीच सबसे लोकप्रिय है।

यह कानून लोकप्रिय के साथ सर्वाधिक लोकप्रिय है, टोरा यहूदी समुदाय में सर्वाधिक लोकप्रिय है। लेकिन भजन की किताब ईसाई समुदाय में सबसे लोकप्रिय है। और आप देख सकते हैं कि, प्रकाशक जब केवल नया नियम प्रकाशित करते हैं, तो अक्सर वे इसमें भजन और नीतिवचन की किताबें भी शामिल करेंगे।

यह बहुत सामान्य प्रकाशन है और प्रकाशक तब तक प्रकाशित नहीं करते जब तक उन्हें पढ़ने के लिए दर्शक न हों। इसलिए, मुझे लगता है कि मैं यह निर्णय लेने के लिए काफी ठोस आधार पर हूँ कि यह संभवतः ईसाई समुदाय के भीतर सबसे लोकप्रिय पुस्तक है। यह भीषण वेदना से लेकर ईश्वर के विरोध तक हर भावना को अभिव्यक्ति देता है।

मैं बहुत ईमानदार रहूँगा, जब वे अन्यायपूर्ण तरीके से पीड़ित हो रहे हों, जब दुष्टों का दबदबा दिख रहा हो तो भगवान का न्याय कहाँ है? वे उस समस्या को नहीं छिपाते जिससे हम सब जूझते हैं। वे अपने दर्द को अभिव्यक्ति देते हैं।

वे संकट में भगवान के न होने की बात करते हैं, भगवान आप कहां हैं? और यहां तक कि क्रूस पर ईसा मसीह भी इसे अभिव्यक्ति देते हैं। मेरे भगवान, मेरे भगवान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया? और वह उसी अनुभूति से गुज़रा। वह हमारी ही तरह हर बात में प्रलोभित था।

और यदि कभी तुम परीक्षा में पड़कर कहते हो, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तो तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? जान लें कि हमारे प्रभु ने बिना पाप के वही अनुभव अनुभव किया है। और इसलिए, यह हमारी सभी भावनाओं को व्यक्त करता है। और न केवल इसलिए कि यह प्रकाशित हो चुकी है, बल्कि मैं यह भी कहूंगा कि यह न्यू टेस्टामेंट में सबसे अधिक उद्धृत की जाने वाली पुस्तक है।

इसे शायद लगभग 250 से अधिक बार उद्धृत किया गया है। इस बारे में कुछ बहस हो सकती है कि आपके पास कहां संकेत हैं और कहां संकेत नहीं हैं। मुझे आश्चर्य इस बात का है कि बाइबिल के लेखक औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं थे।

वे शास्त्री नहीं थे। और फिर भी उनके पास पवित्रशास्त्र पर इतना नियंत्रण था कि वे इसे इतनी चतुराई से, कभी-कभी बहुत व्याख्यात्मक, बहुत हद तक जिस पर यह निर्भर करता था, उपयोग करने में सक्षम थे, लेकिन अक्सर बहुत रचनात्मक रूप से और नई स्थितियों के लिए इसका उपयोग करते थे। इन मछुआरों को इस प्रकार का ज्ञान था।

इसने शास्त्रियों, वकीलों और रब्बी समुदाय के शिक्षित लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। इन लोगों को यह ज्ञान कहां से मिला? और निःसंदेह, यह पवित्र आत्मा के पास वापस चला जाता है, लेकिन पवित्र आत्मा जो पहले से था उसका उपयोग करता है, जो वहां मौजूद है उसका अक्सर उपयोग करता है। मुझे लगता है कि उन्हें धर्मग्रंथ याद हो गये होंगे।

तो, वे बिना किसी औपचारिक शिक्षा के केवल साधारण लोग थे जिन्होंने अपना जीवन धर्मपरायणता से भजनों में बिताया। इसलिए, जब वे प्रार्थना करते हैं, जब वे गाते हैं, तो वे भजनों की ध्वनि सुन सकते हैं, जैसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, जब जॉन स्वर्गदूत को गाते हुए सुनता है, तो वह वास्तव में भजन की पुस्तक की तरह सुन रहा होता है। वे बहुत समान हैं।

उदाहरण के लिए, मैरीज़ मैग्रीफ़िकैट, और वे बस इसे उठा लेते हैं। रोमियों 8 में पौलुस कहता है, हम वध के लिये भेड़ों के समान गिने जाते हैं। वह कहां से आया? भजन 44.

और वे बस चुन सकते हैं, यह सिर्फ उनके ताने-बाने और उनके बाने का हिस्सा है, यह क्या है? ताना-बाना या जो कुछ भी हो। यह सिर्फ उनके ताने-बाने का एक हिस्सा था जिसमें ये भजन शामिल थे और मुझे लगता है कि इन व्याख्यानों को सुनने वाले अधिकांश लोगों के बारे में यह सच है कि वे वर्षों से भजनों में रुचि रखते हैं। और अक्सर लगभग हर कोई भजन 23 को जानता है, है ना? यह दुनिया के सबसे प्रसिद्ध ग्रंथों में से एक है।

यह एक पन्ने पर आपकी छोटी उंगली से अधिक नहीं है, बल्कि यह पूरे जीवन को बदल देता है। यह आश्चर्यजनक है। इतना छोटा पाठ ऐसा कर सकता है।

यह इतना शक्तिशाली है। मैं अक्सर कहता हूं कि लोग कहते हैं कि एक तस्वीर हजारों शब्दों के बराबर होती है। मैं कहूंगा कि भजन 23 के छह छंद चित्रों की एक पूरी गैलरी से बेहतर हैं जो यह हमारे लिए कर सकते हैं।

यह बहुत शक्तिशाली है। मैं ईमानदारी से विश्वास करता हूँ कि यीशु ने भजनों को कंठस्थ कर लिया था। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने भजन याद कर लिये हैं।

जैसा कि मैंने नोट्स में लिखा है, मैंने मर्लिन कूपर का सिर्फ एक उद्धरण दिया है, जो नवीनतम पुस्तक मैंने स्तोत्र पर पढ़ी है वह ऑक्सफ़ोर्ड हैंडबुक ऑफ़ द स्तोत्र है। इसमें कुछ अच्छे निबंध हैं। इसमें बहुत सारे निबंध हैं, मुझे नहीं लगता कि ये बहुत उपयोगी निबंध हैं और इसकी कीमत लगभग सौ डॉलर है।

इसलिए मुझे यह नहीं पता। कोई बात नहीं। मैं इसकी आलोचना करने के लिए यहां नहीं हूँ।

लेकिन फिर भी, मैं इसे आपके लिए उद्धृत कर रहा हूँ। उनका कहना है कि यह पहले पैराग्राफ में है, प्रारंभिक ईसाई स्कूलों, विशेष रूप से मठवासी स्कूलों ने युवा दीक्षार्थियों को स्तोत्र और चयनित नए नियम के पाठ के माध्यम से पवित्रशास्त्र के अध्ययन से परिचित कराया। एक बार मठ में प्रवेश करने के बाद, नवदीक्षित को स्तोत्रों को याद रखना होता था और अपने दैनिक कार्य करते समय उनका पाठ करना होता था।

इसलिए, उन्होंने स्मृति के प्रति प्रतिबद्धता जताई और फिर दिन भर काम करते समय, वे भजन गाते थे और यह उनके चरित्र का हिस्सा बन गया। शुरुआती चर्च में बिशप बनने के लिए, आपको भजन की पूरी किताब याद करनी होती थी ताकि आप पुजारी की जांच कर सकें और सुनिश्चित कर सकें कि वह भजन की किताब जानता है। तो, उन्होंने वास्तव में किताब याद कर ली।

मैं तुम्हारे लिए पढ़ा रहा हूँ। मैंने ऐसा नहीं किया है, लेकिन इससे आपको ईसाई चर्च के इतिहास में इस पुस्तक के महत्व का कुछ अंदाज़ा मिलता है। तो, यह गुटेनबर्ग प्रिंटिंग प्रेस पर छपी पहली किताब है।

पहली किताबों में से एक जिसका हमेशा अनुवाद किया जाता है। तो यह है, मुझे लगता है कि मैं यह कहने में निष्पक्ष हूँ, यह ईसाई समुदाय के भीतर सबसे लोकप्रिय पुस्तक है। हमें अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और हम 2000 साल के इतिहास का हिस्सा हैं।

तो, हम नये नहीं हैं। हम एक समुदाय का हिस्सा हैं, अध्ययन का एक इतिहास है। और हम उसी आध्यात्मिक भोजन में भाग ले रहे हैं जिसने 2000 वर्षों से चर्च का पोषण किया है।

यह आध्यात्मिक भोजन है जिसने चर्च को वैसा बनाया है जैसा चर्च को होना चाहिए। हमने इसमें जो अधिक आत्मसात किया है, हम उसका प्रचार बाइबिल पर अधिक और उपचार पर कम कर रहे हैं। मैं देखता हूँ कि आज बहुत से उपदेश उपचारात्मक और मनोवैज्ञानिक हैं।

इसका उद्देश्य लोगों को खुश करना है, लेकिन यह लोगों को पवित्र नहीं बनाता है। यदि हमारे पास बाइबल और व्याख्याएँ अधिक होतीं, तो हमारे पास एक पवित्र चर्च होता और नहीं, मुझे लगता है कि थोड़ा बहुत ही उदासीन चर्च, हमारे दृष्टिकोण में अधिक अनुशासित। तो, फिर दूसरे पैराग्राफ में, मैं जटिलता के बारे में बात कर रहा हूँ।

हालाँकि, पुराने नियम की सभी पुस्तकों में से, मैं सुझाव दूंगा कि यह सबसे कठिन है क्योंकि यह लगभग एक हजार वर्षों में लिखी गई है। सबसे पुराना भजन भजन 90 है, जो परमेश्वर के जन मूसा द्वारा लिखा गया है। तो यह लगभग 1300 के आसपास वापस जाता है।

कुछ भजन निर्वासन के बाद से आते हैं। वास्तव में, भजन 137 उस समय के बारे में बताता है जब वे बेबीलोन में थे और पीड़ा देने वालों ने कहा, हमारे लिए सिय्योन के गीतों में से एक गाओ। हम देखेंगे कि यह एक विशिष्ट प्रकार का भजन है।

लगभग पाँच या इतने ही भजन हैं जो सिय्योन के गीत हैं। वे कहते हैं, हमारे लिए उन भजनों में से एक गाओ, सिय्योन के गीत, जो जश्न मनाते हैं कि सिय्योन कितना महान है। और वहां वे निर्वासित हैं, और उनका मन्दिर खंडहर हो गया है।

उनका राजा, उसका मुकुट धूल में लोट रहा है। वे बस इन लोगों का मज़ाक उड़ा रहे हैं जो भगवान की पूजा करने का दावा करते हैं। तो, यह हर तरफ फैला हुआ है।

वास्तव में, कुमरान के साक्ष्य से पता चलता है, और यह थोड़ा विवादास्पद है, कि यह ईसा के समय से पहले ईसाई युग की शुरुआत के समय, समूहीकरण के किसी भी प्रतिद्वंद्वी तरीके के बिना अपने अंतिम रूप तक पहुंच गया था। अब यह एक महान विस्तार है। मुझे लगता है कि यह उससे पहले मैंने ही तय किया था, लेकिन यह किसी के भी दृष्टिकोण से निर्धारक होगा।

लेकिन मेरा कहना यह है कि यह लंबे समय से चल रहा है। इसमें हर तरह की सामग्री मौजूद है। वह व्यक्ति है जो बेबीलोन के बच्चों को ले जाता है और उन्हें चट्टानों पर पटक देता है।

ईसाई समुदाय में यह कठिन चीज़ है। आप इसे कैसे समझते हैं? यह उनकी सभी भावनाओं के साथ बहुत जटिल है। आप वास्तविक ईमानदार अभिव्यक्ति को कैसे समझते हैं? हे भगवान, हे भगवान, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? यह ईसाई धर्मशास्त्र के अनुकूल नहीं है।

कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा। और फिर भी वे कह रहे हैं कि तुमने मुझे छोड़ दिया है।

तो, यह एक बहुत ही जटिल पुस्तक है। इसलिए यह आसान नहीं है। अब आप मदरसे में हैं।

इसलिए, आपको कठिन शैक्षणिक प्रश्नों से निपटना होगा। यह कोई चर्च नहीं है। मुझे इस पुस्तक के वास्तविक मुद्दों को संबोधित करना है।

क्या डेविड ने वास्तव में भजन लिखे थे? यदि आप कहते हैं कि डेविड ने भजन लिखे हैं तो मेरे समुदाय में, आपको शायद ही किसी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में नौकरी पर रखा जा सकता है। एक निश्चित पूर्वाग्रह है। मेरा मतलब है, यदि आपका पवित्रशास्त्र के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण है, तो कोई खुलापन नहीं है।

इसलिए, मैं अकादमिक समुदाय के साथ-साथ चर्च से भी बात कर रहा हूँ। लेकिन आपको उन कठिन सवालों को संभालना होगा जो उठाए जा रहे हैं और जिन्हें हमारे सेमिनारियों को सिखाया जा रहा है। मुझे लगता है कि यह एक कारण है कि मंच अधिक महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि आप मदरसे से बाहर आते हैं, आप कोयले की खदान से नहीं जा सकते, आप सफेद सूट में कोयला खदान में नहीं जा सकते और काले रंग के बिना बाहर नहीं आ सकते आप पर।

मुझे लगता है कि हमारे अधिकांश मदरसों और विश्वविद्यालयों में कुछ हद तक कलंकित हुए बिना आगे बढ़ना बहुत कठिन है। शायद मुझे कुछ हद तक काला कर दिया गया है। मेमने के खून के लिए भगवान का धन्यवाद करें जो हमें बर्फ की तरह सफेद बनाता है।

लेकिन यह कई मायनों में एक कठिन किताब है। इसलिए, हमें कठिन प्रश्न पूछने होंगे। पुस्तक को पढ़ाने में, इसे पढ़ाने में मेरी एक और कठिनाई यह है कि जब आप ईश्वर के बारे में बात करते हैं, तो कुछ अप्रामाणिक होता है।

मुझे ऐसा लगता है, मेरे लिए ईश्वर के बारे में बात करना बहुत कठिन है। वह मेरा भगवान है। भगवान के बारे में बात करने का एकमात्र उचित तरीका, हे भगवान, दूसरा व्यक्ति आप में है, तीसरा व्यक्ति नहीं।

क्योंकि जब मैं ईश्वर के बारे में बात करता हूँ तो मैं ईश्वर को हमसे दूर कर देता हूँ। आप स्वयं को लगभग ऊपर रखते हैं, मैं ईश्वर के बारे में बात कर रहा हूँ। यह एक अद्भुत अवधारणा है।

आप उसे कैसे करते हैं? इससे मुझे परेशानी होती है। फिर भी जैसा कि धर्मशास्त्र में है, आपको ऐसा करना होगा। इसलिए मुझे हमेशा थोड़ा-सा अप्रामाणिक महसूस होता है।

काश मैं कन्फेशन्स में ऑगस्टीन की तरह बोल और लिख पाता। उन्होंने कभी ईश्वर के बारे में बात नहीं की। हे भगवान, यह हमेशा आप ही थे।

वह हमेशा ईश्वर से दूसरे व्यक्ति में बात करते थे। वह अद्वितीय है। इसलिए मेरी शैली अकादमिक है और इसका झुकाव वैज्ञानिकता की ओर है।

इसलिए, हमें उस समस्या के बारे में जागरूक होना चाहिए ताकि हम हमेशा आपके पास, हे भगवान, एक व्यक्तिगत रिश्ते के लिए वापस आ सकें। एक बार मैंने बीसी में विक्टोरिया विश्वविद्यालय में धर्मनिरपेक्ष छात्रों के साथ भजन की पुस्तक पढ़ाई। मैंने यह कहकर शुरुआत की, मुझे पता है कि हम सभी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आदी हैं कि आप किसी वस्तु को देखते हैं, आप उसके बारे में परिकल्पना करते हैं, और आप उसका परीक्षण करते हैं।

लेकिन यह एक ऐसी वस्तु है जिसके बारे में आप बात करते हैं, वैज्ञानिक रूप से खोज करते हैं, और अपनी परिकल्पना को मान्य करने का प्रयास करते हैं। मैंने कहा, यदि हम स्तोत्रों की पुस्तक के साथ ऐसा करते हैं, तो हम पुस्तक के मूल उद्देश्य को ही नष्ट कर देंगे क्योंकि हमने इसे इस प्रकार बनाया है कि हम ईश्वर को नहीं सुन सकते। हमने क्या किया, मैंने छात्र को कमरे के सामने आकर कोने में खड़े होने के लिए कहा।

खेल का नियम यह था कि आप छात्र से बात नहीं कर सकते और वह आपसे बात नहीं कर सकता। तुम्हें यह भी यकीन नहीं है कि वह एक व्यक्ति है। तो अब हम बस छात्र के बारे में बात कर सकते हैं, और जो हम देखते हैं उसका निरीक्षण कर सकते हैं।

तो उन्होंने इस तरह से शुरुआत की। फिर कुछ मिनटों के बाद, उन्हें एहसास होने लगा कि उन्होंने खुद को उस स्थिति में रख लिया है। वे उस व्यक्ति को कभी नहीं जान सके।

वे इस पर गलत तरीके से आ रहे थे। मैं तुम्हारे बारे में बात करके तुम्हें नहीं जान सकता। मुझे आपकी बात सुननी है।

मुझे तुम्हारे पास आत्मा लेकर आना है। मुझे कुछ सहानुभूति के साथ आना होगा। अगर मैं सहानुभूति के साथ नहीं आया, तो आप जो कुछ भी कहेंगे, मैं उसे गलत समझूंगा।

मुझे लगता है कि कभी-कभी जब लोगों को मेरी स्थिति पसंद नहीं आती है, जिसे मैं पूरी तरह से निर्दोष समझता था, तो वे इसे खराब कर देते हैं और इसे मेरे इरादे के विपरीत बना देते हैं। कुछ - कुछ फिल्म द ब्लाइंड साइड की तरह। याद रखें कि मिसिसिपी में इस परिवार ने इस काले छात्र को कहाँ लिया था और उनका मतलब दयालुता था।

यह वास्तव में एक ईसाई कृत्य था। तभी सामाजिक मामला कार्यकर्ता आया और उसने कहा, वे सिर्फ आपका उपयोग कर रहे हैं और उसके दिमाग में जहर भर दिया। वे केवल आपका मनोरंजन कर रहे हैं ताकि आप मिसिसिपी फुटबॉल टीम में एक महान स्टार बनें।

उन्हें वास्तव में आप में कोई दिलचस्पी नहीं है। वे टीम में रुचि रखते हैं। उनके इरादों का आकलन करें और उस युवक के दिमाग में जहर भर दें।

कुछ देर लगी। और फिल्म के अंत में, यह काला छात्र, एक भयानक व्यक्ति, वह परिवार के साथ पहचान करता है। और उन्होंने कहा कि यह मेरा परिवार है।

यह एक बहुत अच्छी फिल्म थी। लेकिन मेरा कहना यह है कि, यदि आप डेविड के इरादों पर सवाल उठाना शुरू कर देंगे और वह सिर्फ भगवान का उपयोग कर रहा है, वह एक नौसिखिया है, सिंहासन पर कब्जा करने वाला है, तो आप उसे पूरी तरह से गलत समझेंगे। कई शिक्षाविद् उन्हें इसी तरह पढ़ते हैं।

वे पॉल रिकोयूर से उद्धृत करने के लिए संदेह की व्याख्या के साथ आते हैं, कि आपको पाठ को कुछ संदेह के साथ देखना होगा। तो यह कुछ ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में मैं बात कर रहा हूँ, यहां मेरे पास जो नोट्स हैं उससे कहीं अधिक। लेकिन हम वहां तक यही पहुंचे।

अब, यदि आपके कोई प्रश्न हैं, तो उन्हें लिखें और फिर हम एक ब्रेक लेंगे और हम उस समय प्रश्नों पर विचार करेंगे। पाठ्यक्रम के दूसरे भाग में मैं बात करता हूँ कि पाठ्यक्रम के उद्देश्य क्या हैं। आप पाठ्यक्रम के कुछ उद्देश्यों को सुन सकते हैं।

पॉल कहते हैं, आप जानते हैं, एक प्रसिद्ध श्लोक, 2 तीमुथियुस 3.16, कि सभी धर्मग्रंथ ईश्वर से प्रेरित हैं। और फिर वह हमें बताता है कि इसका उद्देश्य क्या है। सभी धर्मग्रंथ ईश्वर से प्रेरित हैं और सिद्धांत, सत्य और सिद्धांत के लिए लाभदायक हैं।

और यही सच होगा। यह जानना लाभदायक है कि ईश्वर कौन है, सिद्धांत। यह भगवान के सेवक के लिए है।

यह लाभदायक है कि आप जानें कि आप परमेश्वर के सेवक के रूप में कौन हैं। तो, यह स्वयं का ज्ञान है। यह ईश्वर का ज्ञान है।

और साथ ही, जैसा कि केल्विन ने अच्छी तरह से समझा, वे दोनों दोहरे ज्ञान हैं कि जैसे आप स्वयं को जानते हैं, आप ईश्वर को जानते हैं, और जैसे आप ईश्वर को जानते हैं, आप स्वयं को जानते हैं। जितना अधिक आप भगवान को जानते हैं, उतना ही बेहतर आप स्वयं को जानते हैं, उतना ही बेहतर आप अपने आप को जानते हैं और आप कितने पापी हैं, और उतना ही बेहतर आप भगवान की पवित्रता को समझते हैं। खैर, किसी भी दर पर, यह सिद्धांत के लिए है और भजन सिद्धांत के लिए हैं।

और इसमें ईश्वर के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है, बहुत कुछ। और दिलचस्प बात यह है कि आपके पास यहां जो है वह यह है कि आपके पास किसी प्रेरित से प्राप्त ईश्वर का सिद्धांत नहीं है। आपके पास भविष्यवक्ता या मूसा से ईश्वर का कोई सिद्धांत नहीं है।

आपके पास ईश्वर का सिद्धांत है जैसा कि ईश्वर के लोगों ने भजन की पुस्तक में समझा है। यदि आप चाहें तो चर्च यहीं है, जहां भगवान के लोग हैं और वे भगवान के बारे में क्या समझते हैं। और यह उनकी सोच के पूरे ढांचे के भीतर सही है।

तो, इसका उद्देश्य ईश्वर को जानना है, यह जानना है कि हम कौन हैं। और एक चीज़ जो वास्तव में हमारे अस्तित्व के बारे में बताएगी वह यह है कि हम दुष्टों के विपरीत हैं। यह उन लोगों के बीच काला-सफेद है जो भगवान पर निर्भर हैं और जो खुद पर निर्भर हैं।

और हम देखेंगे कि हम अपनी निर्भरता, अपनी नम्रता, अपनी बच्चे जैसी स्थिति, अपनी निर्भरता से परिभाषित होते हैं। अब, मैं नहीं जानता कि औसत व्यक्ति अपने बारे में इस तरह सोचता है कि वह पूरी तरह से आश्रित व्यक्ति है, लेकिन किताब में यही आएगा। इसलिए, स्वयं को समझना लाभदायक है।

और यह लाभदायक है। इसलिए, जब आप सत्य को समझते हैं, तो वह आपको डांटता है क्योंकि हम सभी वास्तविकता से बहुत पीछे हैं। हम सभी अवास्तविकता में रहते हैं।

हम सभी कुछ हद तक पागल हैं, कुछ दूसरों की तुलना में अधिक, क्योंकि हम सत्य, ईश्वर की वास्तविकता में नहीं जी रहे हैं। जब आप ईश्वर की वास्तविकता में नहीं रह रहे हैं, तो आप कुछ हद तक पागल हैं। आप दुनिया को गलत नजरों से देख रहे हैं।

खैर, वैसे भी, तो फिर, लेकिन यह हमें वहाँ नहीं छोड़ता। यह हमें सुधारता है और हमें निर्देश देता है कि हम सभी धार्मिकता उत्पन्न कर सकें और हम पृथ्वी के नमक और ज्योति बन जायेंगे। तो यह पवित्रशास्त्र का कार्य है।

और यह निश्चित रूप से भजनों का कार्य है। अब यह आपको आश्चर्यचकित कर सकता है, कि मेरे पाठ्यक्रम का वास्तविक उद्देश्य धर्मशास्त्र पढ़ाना नहीं है। वह एक अलग कोर्स होगा।

मैंने विभिन्न पुस्तकों का बाइबिल धर्मशास्त्र पढ़ाया है, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। मैं स्तोत्रों की पुस्तक का बाइबिल धर्मशास्त्र नहीं पढ़ा रहा हूँ। मैं कुछ अलग, कुछ और प्रारंभिक कार्य कर रहा हूँ ताकि आप धर्मशास्त्री बन सकें।

और मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह आपको भजन को प्रामाणिक रूप से पढ़ने के लिए चश्मा देना है। तो आप भजनों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और इसलिए आपका धर्मशास्त्र अधिक प्रामाणिक और अधिक ठोस है। तो, आपके पास कुछ और मौलिक होना चाहिए।

सही परिणाम प्राप्त करने के लिए विधि पहले होनी चाहिए। आपके पास सही तरीका होना चाहिए। और यही कारण है कि हम स्तोत्र के विभिन्न तरीकों को आजमाने जा रहे हैं जिनका उपयोग वर्षों से किया जा रहा है।

और जब मैंने 1968 में पाठ्यक्रम पढ़ाया, तो यही बात मेरे सामने आई। जैसे ही मैंने साहित्य पढ़ा, लोग अलग-अलग तरीकों से इसे पढ़ रहे थे, कुछ अच्छे थे, कुछ बुरे। मैं वही बटोर रहा था जो मुझे अच्छा लगा।

और इसलिए हम पाठ्यक्रम में उस पर गौर करेंगे। मैरीलैंड विश्वविद्यालय में एडेल बर्लिन द्वारा एक अद्भुत कहावत है। उन्होंने कहा कि आप तब तक नहीं जानते कि किसी पाठ का क्या अर्थ है जब तक आप यह नहीं जानते कि इसका अर्थ क्या है।

और हम यह सीखने जा रहे हैं कि इसका मतलब क्या है। मुझे, इनमें से एक दृष्टिकोण को अलंकारिक दृष्टिकोण, काव्यशास्त्र कहा जाता है। ये बहुत नाटकीय है।

यह भजन के बाहर होगा। यदि आप अपने नोट्स को अपने 352 पृष्ठों में से 303 पृष्ठों में बदल देंगे। तो जैसा कि मुझे याद है, यह पृष्ठ 303 पर था।

मैं वहाँ पहुंचूंगा। सौभाग्य से, मैं आपसे पहले वहाँ नहीं पहुंच पाऊंगा। आइए देखें, पेज दो यहां।

हाँ। पृष्ठ 303 पर, आलंकारिक दृष्टिकोण के तहत, मैं उस दृष्टिकोण का एक हिस्सा साझा करने का प्रयास कर रहा हूँ, यह समझना है कि साहित्य कैसे संरचित है। बाइबिल के लेखकों ने अपनी सामग्री की संरचना उस तरह से नहीं की जिस तरह हम आम तौर पर आज करते हैं।

हम आम तौर पर एक बहुत ही रैखिक पथ पर संरचना करते हैं कि यह ए, बी ए का अनुसरण करता है और रेखा के नीचे होता है। बाइबिल का अधिकांश साहित्य एक अलग संरचना का अनुसरण करता है। यह ए, बी, सी, डी, हो सकता है, और फिर इसे बढ़ाता है।

और फिर आप ए, बी, सी, डी पर वापस जाएं। यह एक बहुत ही सामान्य पैटर्न है। जब तक आपके पास वह लेंस नहीं है, वे यही कर रहे हैं।

आपको समझ नहीं आ रहा कि यहाँ क्या हो रहा है। हमने तो बस यही कहा था, लेकिन उन्होंने इसे और अधिक तीव्रता से कहा है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा वे करते हैं।

इसे वैकल्पिक समानता कहा जाता है। एक और प्रकार है, और उसे चियास्टिक कहा जाता है। लेकिन अब यह वास्तव में इन दिनों एक चीज़ बन गई है, एक चिस्म।

चियास्म ग्रीक अक्षर ची से है, इसमें एक क्रॉस होता है। चियास्म शब्दों की आपकी अवधारणा है जिसमें ए शब्द या ए विचार होता है, और उसके बाद बी शब्द या बी विचार होता है, और फिर सी और डी होता है। फिर यह एक्स पर जाता है और फिर आप वापस जाते हैं और आपको डी मिलता है। और आप एक्स, डी से ठीक पहले इस विचार पर वापस जाते हैं और फिर आप सी पर वापस जाते हैं जो सी से मेल खाता है और आप बी पर वापस जाते हैं जो बी से मेल खाता है इत्यादि। और यह एक सामान्य, बहुत सामान्य बात है।

हम बस यही सीख रहे हैं। यह सभी प्राचीन और नवीनतम साहित्य में है। आज शिक्षा जगत में यह प्रचलन में है।

तीसरा पैटर्न चियास्म नहीं है, बल्कि जिसे मैं संकेंद्रित कहता हूँ। यह कभी-कभी अलग नहीं होता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह होना चाहिए। और यहीं आप ए, बी, सी, सी, बी, ए जाते हैं।

तो, कोई x नहीं है। इसलिए, आप इसे पानी के संदर्भ में सोच सकते हैं। यदि आप संकेंद्रित को उस तरीके से समझना चाहते हैं जिस तरह से मैं शब्दों का उपयोग करूंगा, तो कभी-कभी इसका उपयोग इस तरह किया जाता है। यह वास्तव में इसे रखने का मेरा तरीका है।

आप इसे ज्वार, ज्वार अंदर, ज्वार बाहर, ए, बी, सी, सी, बी, ए के रूप में सोच सकते हैं। आप चियास्टिक समानता को एक तालाब में चट्टान फेंकने के रूप में सोच सकते हैं। आप चट्टान को तालाब में फेंकते हैं और सभी लहरें तरंगित हो उठती हैं और आपकी झील के बायें छोर की लहर झील के दायें छोर की लहर से मेल खाती है और वे सभी तरंगित हो उठती हैं।

और फिर आपके पास बीच में चट्टान है। वह एक्स है। वैकल्पिक समानता, मैं लहरों और ज्वार के बारे में सोचता हूँ। तो, लहर आती है और फिर एक बड़ी लहर आती है।

वह वैकल्पिक समानता है। अब इसका उपयोग भजनों में किया जाता है और ये विभिन्न प्रकार की संरचनाएँ हैं। जब हम विभिन्न प्रकार के भजनों की ओर मुड़ते हैं तो हमें उन्हें इंगित करना होगा।

लेकिन इसे स्पष्ट करने के लिए, यहां पृष्ठ 303 पर वैकल्पिक समानता है। मैंने माउंट होरेब में एलिजा के अनुभव की समानता का उपयोग किया। याद रखें वह इज़ेबेल से भाग रहा था।

वह होरेब पर्वत पर जाता है और वह चाहता है, मुझे लगता है, ईश्वर से रहस्योद्घाटन और खुद को खोजने में कठिनाइयाँ। इसलिए, वह वापस वहीं चला जाता है जहां मूसा को ईश्वर से रहस्योद्घाटन मिला था। वह वहां गुफा में है, शायद मूसा उसी गुफा में था जब भगवान वहां से गुजरे थे।

और इसलिए वह यह कहकर शुरू करते हैं, कहानी पृष्ठ 303 पर शुरू होती है। यह 1 राजा 19 है। ए. गुफा में सेटिंग और भगवान का वचन आया, उसके बाद भगवान का प्रश्न आया।

तुम यहाँ क्या कर रहे हो, एलिय्याह? सी. अब वह उत्तर देता है, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति अति उत्साही हूँ और वे मेरा प्राण लेना चाहते हैं। डी. तब प्रभु ने कहा, ई. अब हवा आती है। थियोफनी को याद रखें, चट्टानों और पेड़ों को चीरती हुई हवा।

और हमें बताया गया कि भगवान हवा में नहीं थे। फिर एक भूकंप आता है जो पृथ्वी को हिला देता है और भूमि को नष्ट कर देता है, आप जानते हैं, लेकिन भगवान भूकंप में नहीं थे। फिर आग आती है, परन्तु प्रभु आग में नहीं है।

और तब हमें एक ध्वनि और एक विरोधाभास, पूर्ण मौन की ध्वनि मिलती है। यह इतना शांत था कि आप इसे सुन सकते थे। मुझे लगता है कि हम सभी ऐसी जगहों पर रहे हैं जहां यह इतना शांत है कि आप इसे सुन सकते हैं।

तो अब देखिये क्या होता है। अब बारी-बारी से समानता आती है। अब हमें गुफा में ए सेटिंग मिल गई है और एक आवाज आई, उसके बाद बी प्रश्न आया।

तुम यहाँ क्या कर रहे हो, एलिय्याह? सी. उत्तर, मैं सेनाओं के प्रभु आदि के प्रति बहुत उत्साही रहा हूँ। और अब वे मेरी जान लेने की कोशिश कर रहे हैं। तब प्रभु ने कहा, सब कुछ बिल्कुल वैसा ही है।

लेकिन अब हमें समांतरता मिलती है। हवा की जगह हमारे पास हेज़ल है जो विनाश लाती है। भूकंप के बजाय, हमारे पास येहू है जिसने बाल के पूरे घराने को मार डाला और मौत ला दी।

और अगला एलिय्याह है जिसने, उदाहरण के लिए, 42 बच्चों को भालूओं द्वारा मार डाला। और इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह क्या कर रहा है। और वह कहता है, हेज़ल घात करता है, येहू घात करता है, एलिय्याह घात करता है।

समानता क्या है? तो, हवा के समानांतर हेज़ल है। भूकंप के समानांतर येहू है। अग्नि के समानांतर एलिय्याह है।

सरासर चुप्पी के समानांतर क्या है? वे 7,000 जो झुके नहीं और उन्हें जमानत की जरूरत है। आप उन्हें सुन नहीं सके. देखिए, एक बार जब आप इसे समझ जाएंगे, तो अब हर कोई सोच रहा होगा कि यह सरासर चुप्पी क्या है? और हर कोई इसकी किसी भी तरह से व्याख्या करता है, लेकिन यह प्रामाणिक नहीं है क्योंकि वे नहीं जानते कि पाठ को कैसे पढ़ा जाए।

आप यह नहीं जानते कि किसी पाठ का क्या अर्थ है जब तक आप यह नहीं जानते कि इसका अर्थ क्या है। यह एक मशहूर कहावत है. और जब आप इसमें शामिल हो जाते हैं तो यह अति हो जाती है।

लेकिन जिन चीजों पर हम बात करने जा रहे हैं उनमें से एक है अलंकारिक दृष्टिकोण। मैं आपको स्तोत्र के बाहर से एक चिस्टिक समानता का एक उदाहरण देता हूँ। हम यह सब स्तोत्रों में देखने जा रहे हैं, लेकिन यहाँ चिस्टिक समानता है।

यह सुलैमान की कहानी में है, राजाओं के पहले 11 अध्यायों में सुलैमान की जीवनी। बेशक, यह पाठ्यक्रम बाइबल के बारे में कुछ बुनियादी ज्ञान मानता है और भजन की पुस्तक भी ऐसा करती है। सुपरस्क्रिप्ट यह मानती है कि आप इतिहास जानते हैं।

मेरा मतलब है, यदि आप पुराने नियम के बारे में कुछ नहीं जानते हैं तो आपको इस पाठ्यक्रम में शामिल नहीं होना चाहिए। यह थोड़ा अधिक उन्नत है. मेरा मतलब है, यह सब लाभदायक है।

यह वैसा ही है जैसा कि ऑगस्टीन ने कहा था कि बाइबिल इतनी उथली है कि एक बच्चा इसमें इतनी गहराई तक जा सकता है कि एक हाथी इसमें डूब सकता है। तो, वैसे भी, लेकिन कोशिश करें, इस विचित्र समानता पर ध्यान दें। यह 1 राजा 1 से 11 तक सुलैमान की जीवनी में है।

और मैं यहां जो करूंगा वह यह है कि मैं तुरंत ए और ए प्राइम का मिलान करूंगा। ठीक है। यहाँ प्रार्थना है.

यहां बताया गया है कि यह पहले किंग्स 1 से 2.12 में कैसे शुरू होता है। एक भविष्यवक्ता शाही उत्तराधिकार में हस्तक्षेप करता है और आपके पास नाथन है, जो अदोनिया के स्थान पर सुलैमान को सिंहासन पर बिठा रहा है। फिर ध्यान दें, अगले पेज पर जाएं, ए प्राइम, यह कैसे समाप्त होता है। एक भविष्यवक्ता शाही उत्तराधिकार का निर्धारण करता है।

यह अध्याय 11, 26 से 43 तक है। तो, इसकी शुरुआत एक भविष्यवक्ता द्वारा एक राजा को सिंहासन पर बिठाने से होती है। इसका अंत एक भविष्यवक्ता द्वारा राजा को सिंहासन से हटाकर किसी और को सिंहासन पर बिठाने के साथ होता है।

इस तरह यह समाप्त होता है. तो, मुझे लगता है कि आप ए और ए प्राइम को एक दूसरे से मेल खाते हुए देख सकते हैं। नोटिस बी, सुलैमान शत्रुता के खतरे और उसकी सुरक्षा के खतरे को समाप्त करता है।

और इसलिए, उसने योआब को हटा दिया, उसने अदोनिया को हटा दिया, गठबंधन में शामिल सभी लोगों को हटा दिया और बहुत ही वैध तरीके से क्योंकि उनमें से प्रत्येक ने स्वयं की निंदा की। उदाहरण के लिए, शाऊल का पुत्र, शिमी, उसका नियम था कि तुम्हें शहर में रहना होगा। आप कहीं और नहीं जा सकते।

और फिर एक दास दक्षिणपूर्व यहूदा की ओर भाग जाता है और वह शहर छोड़ देता है, जो दिखाता है, सबसे पहले, वह राजा की बात नहीं मानता है। इससे पता चलता है कि वह एक अच्छा आदमी नहीं है क्योंकि एक गुलाम अपने अच्छे मालिक से दूर नहीं भागता। वह एक क्रूर आदमी है।

तो, यह आपको इसकी एक अंतर्दृष्टि देता है। लेकिन मुद्दा यह है कि, वह सभी खतरों को हटा देता है और अध्याय का अंत कहता है, और इस तरह उसका सिंहासन स्थापित हो गया। अब उसका प्रतिरूप बी प्राइम है।

यहोवा ने सुलैमान की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया। उदाहरण के लिए, वह यारोबाम को ऊपर उठाता है। वह सीरिया के राजाओं को खड़ा करता है और वह उन सभी को खड़ा करता है जो सुलैमान के विरुद्ध हैं।

तो, यह पूरी तरह उलट है। इसलिए आपने भविष्यवक्ता को उसे सिंहासन पर बिठाया। आपके पास एक भविष्यवक्ता है जो उसे सिंहासन से उतार रहा है।

आपने खतरों को खत्म कर दिया है। अब आपके सामने एक-दूसरे से मेल खाते नए खतरे हैं। अब आपको सी मिलता है, आपके पास सुलैमान के शासनकाल का प्रारंभिक वादा है, हर कोई अपनी-अपनी बेल और अपने-अपने अंजीर के पेड़ के नीचे।

सी प्राइम, सुलैमान के शासनकाल की दुखद विफलता। और वह अपने सहयोगियों आदि के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार नहीं करता है। फिर आपके पास डी है, सुलैमान अपने उपहार का उपयोग लोगों के लिए करता है।

डी प्राइम, ज्ञान का यह उपहार। डी प्राइम, सुलैमान के शासनकाल की दुखद विफलता। वह आत्मलीन हो जाता है।

वह और अधिक अमीर हो जाता है और वह पूरी तरह से आत्म-लीन हो जाता है और परिणामस्वरूप अपना राज्य खो देता है। फिर आपके पास ई है, मंदिर के निर्माण की तैयारी और वह सुलैमान से मेल खाता है। ई प्रधान, सुलैमान ने मंदिर समर्पित किया लेकिन भगवान ने जीत लिया।

फिर आपके पास एफ है, सुलैमान मंदिर बनाता है। फिर आपके पास एफ प्राइम है, सुलैमान ने ताम्रकार हीराम के माध्यम से मंदिर को सुसज्जित किया। धुरी पर ध्यान दें।

सुलैमान ने प्रतिद्वंद्वी इमारतें बनाईं। फिर उसने फिरौन की बेटी के लिये एक महल बनवाया। उन्होंने लेबनान का जंगल नामक एक शानदार न्याय कक्ष बनवाया।

इसमें बहुत सारा देवदार था। उन्होंने अपना घर तो बना लिया, लेकिन मंदिर बनाना बंद कर दिया। यह मंदिर की इमारत के ठीक बीच में है।

तो, वह मंदिर का निर्माण कर रहा है और फिर वह रुक जाता है। अब वह अपनी हवेली और महल बनाना शुरू कर देता है। यही उसका पतन है।

वही धुरी है। अन्यथा, यदि आप नहीं समझते हैं, तो चियास्म को समझने के लिए आपके पास यह लेंस नहीं है, आप कहते हैं, अध्याय सात के मध्य में यह सब क्या है? और अचानक, यदि आप इसे समझते हैं, तो यह इस परिच्छेद का सबसे महत्वपूर्ण खंड है, जो पहली बार पढ़ने पर अप्रासंगिक लगता है। तो, मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि आप नहीं जानते कि किसी पाठ का क्या अर्थ है, एक पाठ का क्या अर्थ है, जब तक आप यह नहीं जानते कि इसका क्या अर्थ है।

मुझे इसी बात की चिंता है। मैं आपको यह जानने में मदद करना चाहता हूं कि इसका मतलब क्या है। यह किसी भी धर्मशास्त्र को करने के लिए प्रारंभिक है।

तब आप अपना स्वयं का धर्मशास्त्र कर सकते हैं जब मैं आशा करता हूं कि मैं आपको कुछ लेंस दे सकता हूं और चर्च की पारंपरिक स्थिति को विश्वसनीय बना सकता हूं। इसलिए, यह कुछ हद तक क्षमाप्रार्थी है क्योंकि मैं अधिकांश शिक्षाविदों से सहमत नहीं हूं। मुझे लगता है कि वे नौसिखियों, नए मदरसा छात्रों को झूठे रास्ते पर ले जा रहे हैं और चर्च को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

तो हम यही करेंगे। हम यही देख रहे हैं। तो, वे दृष्टिकोण क्या हैं? यही उद्देश्य है।

मैं चाहता हूं कि आप उन तरीकों को समझें जिनका हम उपयोग करने जा रहे हैं। उनमें से एक है ऐतिहासिक दृष्टिकोण। यह पारंपरिक दृष्टिकोण है।

हमें यह पूछना होगा कि जब एनआईवी डेविड का अनुवाद करता है, तो क्या वह सबसे अच्छा अनुवाद है या उसे डेविड द्वारा किया जाना चाहिए? ऑफ़ डेविड एक फ़ज अनुवाद है। लगभग सभी अनुवाद इसके बारे में कोई निर्णय लिए बिना ऐसा करते हैं। लेकिन यह लेडेविड है।

इसका मतलब या तो डेविड से हो सकता है या डेविड से हो सकता है या किसी तरह से यह खुला है या इसका मतलब डेविड से हो सकता है। मैं ऐतिहासिक दृष्टिकोण की जांच करने जा रहा हूं। इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह इतिहास पर आधारित है या नहीं? इन सबका यीशु से क्या लेना-देना है? तो ये वे प्रश्न हैं जो मुझे पूछने हैं।

हम ऐतिहासिक दृष्टिकोण को देखने जा रहे हैं। दूसरा दृष्टिकोण जो हम उपयोग करने जा रहे हैं उसे फॉर्म-क्रिटिकल दृष्टिकोण कहा जाता है। रूप-महत्वपूर्ण दृष्टिकोण भजनों के समूहों को उनके विभिन्न प्रकारों के अनुसार अलग करता है।

तो मूल रूप से, आपके पास तीन प्रमुख प्रकार के भजन हैं। आपके पास उनके उपविभाजन हैं, लेकिन आपके पास भजन, प्रशंसा के गीत हैं। यह भजनों, स्तुति के गीतों में है, कि हमें मुख्य रूप से ईश्वर का सिद्धांत मिलता है क्योंकि वहां वे उसके गुणों का जश्र मनाते हैं और वे उसकी दो चीजों का जश्र मनाते हैं, उसकी रचना के कार्य और इतिहास में और अपने लोगों के प्रति उसकी वफादारी का जश्र मनाते हैं।

तो हम उस पर गौर करेंगे, भजन, भगवान के सिद्धांत। हम प्रपत्र आलोचना में भी देखेंगे, हम याचिकाओं, प्रार्थनाओं को देखेंगे। और वहां, उदाहरण के लिए, आप वही कर सकते हैं जो आप धार्मिक रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रशंसा के बिना कोई याचिका नहीं है। सभी याचिकाएँ धर्मशास्त्रीय हैं। भजन 88 में केवल एक अपवाद है, इसे भजन की काली भेड़ कहा जाता है।

ऐसा क्यों है कि अय्यूब विरोध कर सकता है, काश मैं कभी पैदा न होता, और भगवान के न्याय पर सवाल उठा सकता था? और परमेश्वर उसे डांटता है और उसे पश्चाताप करना पड़ता है। और भजनहार बिल्कुल वैसा ही करता है। और भगवान प्रसन्न होते हैं।

क्या फर्क पड़ता है? अंतर यह है कि अय्यूब की कोई प्रशंसा नहीं थी। प्रशंसा के बिना कोई याचिका स्वीकार्य नहीं है। यह अविश्वास की अभिव्यक्ति है।

और एक बार जब आप मुद्दे को समझना शुरू कर देते हैं, तो आप देखते हैं, आपको यह जानना होगा कि इसका क्या मतलब है। और एक बार जब आप समझ जाते हैं कि यहां एक विशिष्ट रूप है, तो आप इन सभी भजनों की तुलना करने और अन्य धर्मग्रंथों के साथ इसकी तुलना करने की स्थिति में हैं। लेकिन यह ऐसी चीज़ है जिसे मैं आपको देखने के लिए लेंस देने की कोशिश कर रहा हूँ ताकि आप समझ सकें।

तो, आप समझते हैं कि यह डॉक्सोलॉजिकल है। जब आप एक समूह के रूप में उनका अध्ययन करते हैं, तो आप यह भी सीखते हैं कि वे सांप्रदायिक हैं। वे लगभग सभी एक इच्छा के साथ समाप्त होते हैं, न केवल मेरे लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए, पूरे समुदाय के लिए, कि प्रभु ने मेरे साथ जो किया है उसके लिए मैं पूरी दुनिया का गवाह बनूंगा।

और जब हम अपनी गवाही साझा करते हैं, तो हम एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं और हम उस तरह से सुसमाचार साझा करते हैं। और इसी तरह सुसमाचार चलता रहा है। तो, वे धार्मिक हैं, मैं कहूंगा, वे सांप्रदायिक हैं।

और वे अत्यधिक, अत्यधिक विनम्र हैं क्योंकि वे जो कर रहे हैं वह अनुदेशात्मक स्तोत्रों का पाठ कर रहे हैं। वे मामले को अपने हाथ में नहीं लेंगे। वे भगवान पर निर्भर हैं।

धर्मी लोग परमेश्वर पर निर्भर होते हैं और वे उस व्यक्ति के विरोध में खड़े होते हैं जो अपना बदला लेता है। अब यहाँ यह ध्यान रखें कि अक्सर ऐसा होता है कि लोग जो कुछ परमेश्वर के लोगों के लिए होता है उसे ले लेते हैं और उसे राज्य पर लागू कर देते हैं। और यह एक बड़ी गलती है।

यह राज्य को नष्ट कर देगा. चर्च का प्रतीक क्रॉस है. रोमियों 13 में राज्य का प्रतीक तलवार है।

और आपको उन नैतिकताओं को अलग रखना होगा। मैं चर्च के बारे में बात कर रहा हूँ. मैं दुनिया के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ.

मैं चर्च के बारे में बात कर रहा हूँ. दुनिया एक अलग कहानी है. यह फिर से अपनी ही चर्चा है।

इसलिए, मैं कह रहा हूँ, मैंने यह कहकर शुरुआत की कि यह हमें ईश्वर के बारे में सिद्धांत देगा। और मैंने कहा, यह हमें संतों के बारे में सिद्धांत देगा। यह एक महत्वपूर्ण अंतर है.

और पौलुस ने यही कहा, कि परमेश्वर का जन, परमेश्वर का संत, हर एक भले काम के लिये तैयार हो। और धर्मग्रंथ चर्च के लिए, हमारी उन्नति के लिए लिखे गए थे, ताकि हम दुनिया के लिए अच्छे नमक और प्रकाश बन सकें। तो यह कुछ ऐसा है जो हमें फॉर्म क्रिटिसिज्म में मिलता है।

मैं आपको यह देखने में मदद करने की कोशिश कर रहा हूँ कि हम इन चीजों में क्यों आते हैं क्योंकि बाद में जब हम प्रहसन और सभी विवरणों में शामिल हो जाते हैं, तो हम कहां हैं और क्या कर रहे हैं इसकी एक बड़ी तस्वीर खो सकते हैं। एक तीसरा दृष्टिकोण जिसका हम उपयोग करने जा रहे हैं वह धार्मिक रीति है कि मंदिर में भजन गाए जाते थे। हम इसे कैसे समझें? मंदिर कैसे कार्य करता था? यह कैसे बोला? इसका प्रतीकवाद क्या है? और इसलिए हम मंदिर को देखने जा रहे हैं और हम इज़राइल के जुलूसों को देखने जा रहे हैं जैसा कि वे भजनों में परिलक्षित होते हैं।

तो, हम मंदिर में रहेंगे और समझेंगे कि मंदिर में क्या हो रहा है और उस मंदिर का थोड़ा वर्णन करेंगे। कभी-कभी यह बहुत ही अलौकिक होता है। मुझे लगता है कि यह स्वर्ग शब्द के विशेषण रूप का एक शब्द है।

ठीक है। इसलिए, हम धार्मिक दृष्टिकोण पर ध्यान देंगे। और फिर जो मैंने आपको पहले समानांतर, संरचनाओं से दिया था, वह अलंकारिक दृष्टिकोण है।

अब जब मैं व्यक्तिगत स्तोत्रों पर चर्चा करूँगा तो हम पूरे पाठ्यक्रम में अलंकारिक दृष्टिकोण का उपयोग करेंगे। इसलिए, मुझे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, मैं बस वहां मौजूद सामग्री का सारांश प्रस्तुत करूँगा। लगभग हर चीज़ में जो मैंने लिखा है, जैसे भजनों पर टिप्पणी या मेरे पुराने नियम के धर्मशास्त्र पर टिप्पणी, लगभग हर जगह, मैंने शुरुआत में ही अलंकारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

इसलिए, लोग जानते हैं कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ और मैं पाठ कैसे पढ़ रहा हूँ। मेरा वास्तविक उद्देश्य, मान लीजिए, जब मैंने उत्पत्ति टिप्पणी लिखी, तो मेरा वास्तविक उद्देश्य यह था कि पाठक पढ़ना सीखें। इसलिए मैं प्रत्येक अनुभाग की शुरुआत उस अलंकारिक दृष्टिकोण से करता हूँ।

तो आपको पता चल जाएगा कि कैसे पढ़ना है। हर हाल में यही इरादा था। तब हमारे पास युगांतशास्त्रीय मसीहाई दृष्टिकोण होगा।

ये भजन यीशु के बारे में इसी तरह बात करते हैं। उन्होंने कहा कि वे सभी उनके बारे में बात करते हैं। उसने एम्मास रोड पर उनके लिए रास्ता खोल दिया।

उसने स्तोत्र की पुस्तक में उन्हें खोल कर बताया। हम उस पर गौर करेंगे। वे कैसे करते हैं, यह जटिलता का हिस्सा है।

हम कैसे समझें कि यह डेविड के लिए इतिहास है, और फिर भी यह यीशु के बारे में भी बात कर रहा है? ताकि उन चीजों से प्रामाणिक तरीके से जुड़ना पड़े। तो आप देख सकते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं।

और अंत में, हम खुद से पूछेंगे, इसे पुनर्लेखन आलोचना कहा जाता है, लेकिन हम खुद से पूछ रहे हैं कि पूरी किताब को एक साथ कैसे रखा गया था? रिडक्शन क्या था? संपादन क्या है? यह पाँच पुस्तकों में क्यों है और ये भजन किसी भी तरह से कैसे जुड़े हुए हैं? या यह महज़ एक जानबूझकर किया गया संग्रह है जिसका कोई अर्थ नहीं है? मैं तर्क दूँगा कि इसका कोई अर्थ है, लेकिन यही आज विद्वता का चरम बिंदु है। हम जहाँ हैं वहीं पुस्तक के संपादन को समझ रहे हैं। मुझे लगता है कि आप देख सकते हैं कि अगर हम इस तरह से भजनों का अध्ययन करें, तो आपको भजन की सामग्री का कुछ अंदाजा हो जाएगा।

मैं यह नहीं कहूँगा कि यह भजन 1, भजन 2, भजन 3 है। यह मेरा दृष्टिकोण नहीं होगा। मुझे आशा है कि मेरा दृष्टिकोण उससे थोड़ा अधिक परिष्कृत है। अब, हम जो करने जा रहे हैं वह यह है कि हम इन विभिन्न रूपों को देखेंगे।

हम प्रत्येक मामले में भजनों को व्यापक रूप से देखेंगे। तो, आपको पूरी तस्वीर मिल जाएगी और फिर मैं एक विशेष स्तोत्र पर ध्यान केंद्रित करूँगा क्योंकि सच्चाई यह है कि हम वास्तव में स्तोत्र का ही आनंद लेते हैं। मैं यह सुनिश्चित करने जा रहा हूँ कि प्रत्येक व्याख्यान जिसे हम वापस लाएंगे और वास्तव में एक भजन करेंगे, क्योंकि हम, कोई भी जो कुछ भी कह सकता है वह पाठ से मेल नहीं खा सकता है।

तो, आइए जैसे-जैसे हम आगे बढ़ें पाठ का आनंद लें। इसलिए मैं जो कर रहा हूँ, हम कहाँ जा रहे हैं उसका उद्देश्य यही है। मुझे आशा है कि आप मेरे साथ यात्रा का आनंद लेंगे।

मुझे मजा आता है। मैं इस दौर पर हर बार भजनों के माध्यम से सीखता हूँ। वहाँ आपका कैलेंडर है जहाँ हम जा रहे हैं।

यह पाठ्यक्रम का परिचय है। अगला व्याख्यान व्याख्याशास्त्र पर है। यह महत्वपूर्ण है कि आप पाठ को सही तरीके से शुद्ध हृदय से पढ़ें।

अधिकांश शिक्षाविद इसे शुद्ध धार्मिक हृदय के चश्मे से नहीं पढ़ते हैं। वे नैतिकता के बारे में बात करेंगे, लेकिन यह बुनियादी बात है जो आपको करनी होगी। शिक्षा जगत में इतनी सारी त्रुटियाँ इसलिए हैं क्योंकि वे पाठ में गलत पूर्वधारणाओं के साथ आती हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक व्याख्यान के लायक है कि आप पवित्रशास्त्र के बारे में क्या सोचते हैं? और सच्चाई यह है कि, उदाहरण के लिए, अगर आप प्रतिभाशाली, मेधावी विद्वान, वाल्टर ब्रूगेमैन को पढ़ते हैं, जो आज बहुत लोकप्रिय हैं। वाल्टर एक प्रतिभाशाली व्यक्ति है, लेकिन मैं नहीं जानता कि पवित्रशास्त्र के बारे में उसका सिद्धांत क्या है। वह इसे कभी मेज पर नहीं रखता।

सच तो यह है, मुझे नहीं लगता कि उसके पास कोई है। मुझे नहीं लगता कि उसके पास पवित्रशास्त्र का कोई सिद्धांत है। उसके पास बहुत सारी अच्छी चीजें हैं, लेकिन मैं जानना चाहता हूँ कि आप कहां से आ रहे हैं।

क्या यह परमेश्वर का वचन है? क्या यह परमेश्वर का वचन नहीं है? आप इस पुस्तक को किस प्रकार देखते हैं? आम तौर पर इस पर ध्यान नहीं दिया जाता और इससे काफी भ्रम पैदा होता है। हम गुंकेल को देखने जा रहे हैं। वह महानतम विद्वानों में से एक हैं।

वे ही आलोचना के जनक हैं। उसके पास इतना डेटा है कि आप अभिभूत हो जाते हैं। क्या आप जानते हैं कि भजनहार कौन है, धर्मी? उनका कहना है कि यह आदिम धर्म है।

उसका मतलब यह है कि उसे एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। वह पागल है और दुश्मन उसके दिमाग में हैं। वह यह सब शोध करता है और अंततः वह एक मानसिक समस्या बन जाता है।

वही धर्मात्मा है। वह इसे स्पष्ट रूप से कभी नहीं कहता, लेकिन वह यही कह रहा है। और मैं इसे उद्धृत करूंगा।

तो, यह मुझे सबसे महान पेंटिंग मोनालिसा की याद दिलाती है। कम से कम लोगों को इसके बारे में कुछ तो पता है। यह सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग है, प्रसिद्ध है।

यदि आप लौवर गए हैं, तो आप शायद ही मोना लिसा के साथ कमरे में प्रवेश कर सकें। यह लोगों से खचाखच भरा हुआ है। हर कोई उसकी विलक्षण, रहस्यमय मुस्कान को लेकर चिंतित है।

आप उस मुस्कान को कैसे समझाते हैं? और इसलिए, मैं उस मुस्कुराहट को समझाने के तरीके पर लेख पढ़ रहा था। एक महिला ने कहा कि मैं इसे समझती हूँ। यह मेरी छोटी लड़की की मुस्कुराहट है जब वह बाथटब में पेशाब करती है।

मेरा मतलब है, आपका मतलब एक तस्वीर को बर्बाद करना है। यह वास्तव में इसे नष्ट कर देता है। उसने इसे ऐसे ही देखा।

इसलिए, मैं कह रहा हूँ कि हरमन रिग्स इस बात में महत्वपूर्ण है कि आप इस सामग्री को कैसे देखते हैं। तो यह मेरा दूसरा व्याख्यान हेर्मेनेयुटिक्स पर है, लेकिन यह बाइबल की किसी भी पुस्तक के लिए वैध है जिसका आप अध्ययन करने जा रहे हैं। और फिर आप कह सकते हैं, हम ऐतिहासिक दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहे हैं और फिर हम एक भजन गाएंगे।

और फिर परिचय के बाद भी, मैं एक भजन 1 करने जा रहा हूँ और हम हमेशा इसे भजनों के साथ मिलाते रहेंगे। और जैसे-जैसे आप वहां से गुजरेंगे, आप विभिन्न प्रकार के भजन देख सकेंगे जिन्हें हम देख रहे होंगे, विभिन्न दृष्टिकोणों को हम देख रहे होंगे। और मैं कह रहा हूँ, हम एक व्यापक दृष्टिकोण पर गौर करेंगे और फिर एक विशिष्ट भजन करेंगे।

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र संख्या एक है, परिचय, दृष्टिकोण का सर्वेक्षण।